

Dr. Priti Ranjan

H.O.D history department

H. D jain college, ara

Notes for ug semester 5

हूण वंश के पतन के क्या कारण थे??

हूणों ने पाँचवीं-छठी शताब्दी ईस्वी के बीच भारत में अपना प्रभुत्व स्थापित किया था। परंतु उनका शासन बहुत लंबे समय तक टिक नहीं सका। कुछ प्रमुख कारणों से हूण साम्राज्य का शीघ्र ही पतन हो गया –

1. केंद्रीय सत्ता का अभाव

हूणों का शासन अत्यंत असंगठित था। उन्होंने किसी मजबूत प्रशासनिक व्यवस्था की स्थापना नहीं की। उनके विभिन्न सरदार स्वतंत्र रूप से शासन करते थे, जिससे राजनीतिक एकता का अभाव था।

2. अत्यधिक क्रूरता और हिंसा

हूण शासक अत्यधिक अत्याचारी और विध्वंसक थे। उन्होंने नगरों, मठों और मंदिरों को नष्ट किया, जिससे जनता में उनके प्रति गहरी घृणा उत्पन्न हो गई। परिणामस्वरूप जनता ने उनके शासन का विरोध किया।

3. भारतीय संस्कृति में आत्मसात न होना

हूण भारत की संस्कृति में समाहित नहीं हो पाए। उन्होंने भारतीय जीवन-पद्धति, धर्म और परंपराओं को अस्वीकार किया। इस कारण वे विदेशी तत्व के रूप में अलग-थलग पड़ गए।

4. गुप्तोत्तर राजाओं का प्रतिरोध

गुप्त साम्राज्य के उत्तराधिकारी शासकों ने हूणों से लगातार संघर्ष किया। विशेषतः **यशोधर्मन (मालवा)** और **नरसिंहगुप्त बलादित्य** ने मिलकर हूणों को निर्णायक रूप से पराजित किया।

5. भीतरी कलह (Internal conflicts)

हूणों के विभिन्न दलों - अल्खोन, नीलखोन आदि - के बीच आपसी संघर्ष चलते रहे। इससे उनकी सैन्य शक्ति कमजोर पड़ गई।

6. संगठन और शासन की कमजोरी

उनका शासन केवल सैन्य बल पर आधारित था। कोई स्थायी प्रशासनिक ढांचा या उत्तराधिकार की स्पष्ट व्यवस्था नहीं थी, जिससे शासन अस्थिर बना रहा।

7. भारतीय राज्यों का पुनरुत्थान

भारत के विभिन्न छोटे-छोटे राज्यों ने हूणों के विरुद्ध एकजुट होकर संघर्ष किया, जिससे हूणों की शक्ति क्षीण होती चली गई।

परिणाम

6वीं शताब्दी के मध्य तक हूणों की शक्ति पूर्णतः समाप्त हो गई। वे भारतीय समाज में मिलकर लुप्त हो गए और स्वतंत्र राजनीतिक सत्ता के रूप में उनका नाम मिट गया।

हूण वंश का पतन उनके असंगठित शासन, क्रूर नीति, सांस्कृतिक अस्वीकार, आंतरिक कलह और भारतीय राजाओं के सशक्त प्रतिरोध के कारण हुआ।